किन्नर समाज और साहित्य

डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन

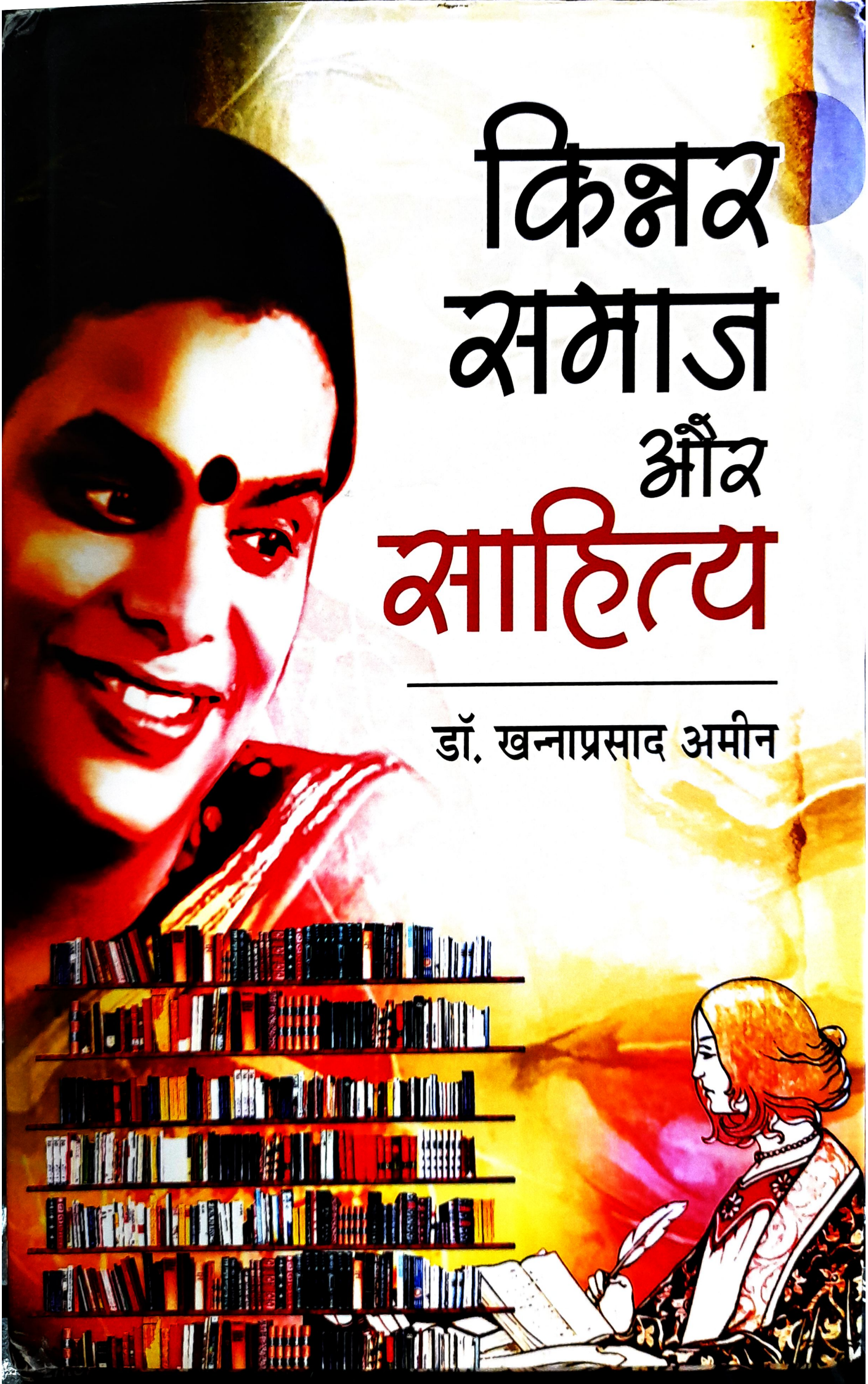

प्रकाशक
श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गामड़ी एक्स.
दिल्ली-110053
फोन : 09312754789, 9313776860
Email : shreenatrajprakashan@gmail.com

ISBN : 978-93-90915-52-1

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : 600.00 रुपये

शब्द संयोजन : प्रिंस कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110007

मुद्रक : पूजा ऑफसेट प्रेस, दिल्ली-110053

भारत में मुद्रित : KINNAR SAMAJ AUR SAHITYA
Ed. By Dr. Khannaprasad Amin

श्री नटराज प्रकाशन, ए-507/12, साउथ गामड़ी एक्स. दिल्ली-110053 से टी.एस. राघव द्वारा प्रकाशित, श्री नटराज प्रकाशन द्वारा पृष्ठ सज्जा शशिकांत सिंह द्वारा आवरण सज्जा तथा पूजा ऑफसेट प्रेस, दिल्ली-110053 द्वारा मुद्रित।

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

1. किन्नर विमर्श से तात्पर्य 9
   -डॉ. दिलीप मेहरा
2. किन्नर उत्पत्ति बतौर दो शब्द 33
   -डॉ. *रामकुमार घोटड*
3. किन्नर समाज और साहित्य 37
   -डॉ. *खन्नाप्रसाद अमीन*
4. 'यमदीप' उपन्यास में समाज से उपेक्षित किन्नर जीवन के संघर्ष की व्यथा-*डॉ. वंदना चुटैल* 47
5. प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली' में किन्नर विमर्श 59
   -*डॉ. हर्षद कुमार चौहान*
6. सफलता का अर्थ दर्द के इतिहास से मुक्ति नहीं है 65
   -*डॉ. पुनीता जैन*
7. तीसरी सत्ता की मार्मिक दास्तान 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा'-*डॉ. यशपाल सिंह राठौड* 88
8. 'मैं पायल' उपन्यास किन्नर जीवन की एक संघर्ष गाथा 100
   -*डॉ. एन.टी. गामीत*
9. दिल को झकझौरती तीसरी ताली 112
   -*प्रियंका कुमारी गर्ग*
10. हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श 122
    -*डॉ. ओमप्रकाश सैनी*
11. इतिहास में दर्ज किन्नर : काल्पनिकता और वास्तविकता 136
    -*डॉ. गौतम कुवर*
12. हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श का प्रतिबिम्ब 142
    -*डॉ. शैलेष पाण्डेय*

10

हिंदी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श

डॉ. ओम प्रकाश सैनी

"उनकी गलियों और तालियों /से भी उड़ते हैं /खून के छींटे /और यह जो गाते-बजाते / उधम मचाते हर चौक-चौराहों पर /उठा देते हैं अपने / कपड़े ऊपर /दरअसल उनकी अभद्रता नहीं /उस ईश्वर से /प्रतिशोध /लेने का उनका एक तरीका है,/ जिसने उन्हें बनाया है /या फिर नहीं बनाया?.../"[1]

'किन्नर' संस्कृत संज्ञा पुलिंग शब्द है। किं नरः न वा इति किंनरः। संस्कृत में किन्नर के लिए किं शब्द भी प्रयोग होता है इसके लिए स्त्रीलिंग शब्द किन्नरी है इन्हें स्वर्ग का गायक भी माना गया है। पुराणों के अनुसार यह देवलोक की एक जाति है। हरिवंश पुराण में नृत्य, गायन तथा वादन में दक्ष किन्नरों को फूलों तथा पत्तों से शृंगार करते हुए बताया गया है। किन्नर हिमालय के क्षेत्र में बसने वाली एक मनुष्य जाति का नाम भी है जिसके मुख्य केंद्र हिमवत और हेमकुट है। रामायण एवं महाभारत की कथाओं में भी किन्नरों का उल्लेख मिलता है। महाकवि कालिदास ने अपने खंड काव्य 'मेघदूत' में यक्षराज कुबेर की राजधानी अलकापुरी का उल्लेख किया है जिसमें यक्ष, किन्नर एवं गंधर्व रहते हैं। कवि कुल गुरु कालिदास के 'कुमारसंभव' के प्रथम सर्ग में ही किन्नरों का मनोहारी वर्णन हुआ है। रामायण काल में भगवान राम के 'वन-प्रसंग' वर्णन में इन हिजड़ों का उल्लेख कुछ यूँ हुआ है

जथा जोग करि विनय प्रनामा, विदा किए सब सानुज रामा।
नारी पुरुष लघु मध्य वड़ेरे, सब सनमानी-पानिधि फेरे॥

अयोध्याकांड 398/4

महाभारत काल में पांडव कुमार अर्जुन एवं नाग राजकुमारी उलूपी के पुत्र अरावन का प्रसंग आया है। अरावन ने पांडवों की विजय कामना के साथ भगवान कृष्ण से मुक्ति की याचना के साथ-साथ अपने विवाह की इच्छा जताई जिस पर स्वयं भगवान कृष्ण ने मोहिनी रूप धारण कर अरावन से विवाह रचाया। आज भी तमिल में हिजड़ा समुदाय के लोग अरावन को अपना देवता मानते हैं। महाभारत में